



ASIA ARCHIVES

2676



ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ गणं ॥ ॐ सर्वत्र कुलसंयुक्तः सखाय कपत्र गणः प्रमुखं  
प्रदुःखं शिवं च नाघन समश्रुति ॥ प्रिनृणंदसिगंकाटंः गंगात्रसंश्रुतंः सत्यवर्षक  
वस्तुनं कया लं मकूठकलं ॥ दिनत्रसिस्तु तंदं पृष्ठंगल समगिनं ॥ वंजपयाध्या  
या गंघ गंज न कामुकं किं न तावय ताथं ब्रह्मयागम सत्तं सदा ॥ नत्वायाग  
म्यत्र ताथं यागिनी गन नायकं ॥ गत्मा धन महं वक्रुडं नृमध्य दत्त न धमना नृ  
क्रूरं दत्तानि गय सत्य साधन क्रूरार्थं कृतादि संश्रुद्धि मन्त्रि यागपत्राथनः ॥ चउ  
मकुल मध्य लुहृदि हंकात्र समुवं ॥ पंक्षि मुखिक गच्छं तावय त्समाहिता ॥  
कल्लो जीकात्र उ पप्रंदता गृवउ मकुलं ॥ तस्य मध्य लुहंकात्रं गन जापं वितावय



गुः॥ उं ज्जि का सर्व रु लि रु रु ॥ त्र क्का का त्र सं जा त व सु य्वा व स्र त्रा य क ॥ वा म  
स का त्र सं र ग च तु प म्र व ला व य गु ॥ अ ग्गा ध मा नं खा प मा नं म नु रु क न म ति  
ना उं पु य त्र स का त्रं पु ति क रुं खा हा ॥ ग ग म्ब ह द यि ध्मा त्मा का य का त्रे त न पु रं ॥ उं ध्वा  
कं ग त्रि त्रा क न द ग्ध वि ला व य रु ॥ उं स ला व सु द्वा सर्व ध र्मा स्र ला व गुं क रू ॥ ग ग जा  
ग म्ब त्रे ना ध मा त्मा नं त्र व य गुं सु धि ॥ ॥ ध्वा य ॥ उं र ग वं गी म ग गी ग्रीः  
म ध्वा जा ग म्ब त्र दे व द वी ष्ठा वां ह ना य ॥ दे ध्वा नि र्वा स म रु या मि न मा न सः  
जा य ॥ उं रू ह ॥ गी या ग म्ब त्रा य रू रुं रुं खा हा ॥ ॥ ध्वा य ॥ उं म ध्वा गी  
जा ग म्ब त्रा य पा या य म ना र्च पु ति क रुं खा हा ॥ ॥ रू न वा य ॥ उं रू ह ॥ जा ग

ध्वाः सिंहाय



मराय स्वाहा ॥ ॐ ४ ॥ अस्मिन्नाकि न्य स्वाहा ॥ ॐ ५ ॥ आयाय स्वाहा ॥ ॐ ६ ॥ वज्र  
कि न्य स्वाहा ॥ ॐ ७ ॥ धात्राकि न्य स्वाहा ॥ ॐ ८ ॥ व तात्राकि न्य स्वाहा ॥ ॐ ९ ॥ व डात्र  
त्राकि न्य स्वाहा ॥ ॐ १० ॥ सिंह पीय स्वाहा ॥ ॐ ११ ॥ वां चितिय स्वाहा ॥ ॐ १२ ॥ मूकि  
पीय स्वाहा ॥ ॐ १३ ॥ त्रकि पीय स्वाहा ॥ ॐ १४ ॥ वज्र प्रणि कु स्वाहा ॥ ॥  
**पूजा मन्त्रास्तुति ॥** ॐ नमोस्तु याग धिप्रसन्नमावकः नमोस्तु सत्यागाडः  
कुलावकः नमोस्तु सत्रा द्विमाहकुदकः नमोस्तु गत्यक नमोमिहंसदा ॥ ॥  
ॐ सर्वेण वासकं नार्थयागिनी जालनायकं ॥ योगमय तं जगन्नाथः गुरुश्च  
दत्तप्रसदा ॥ स्मरन्नाकि नीमहादवीः सहजानन्देक रूपिणीः प्रज्ञास्वनास्व



तूपास्मावन्द्यं मातृदायनी ॥ हंका लपत्र मंदव हंका लसिद्धि एं ऊनं हंका  
न एव शुभं हंका लायतुं न मास्तुते ॥ हंका मि ॥ स्प ॥ गुंडु मसि ॥  
स्प ॥

पाः हाना ज्ञाना न सादवाः सप्तजा नंदे कृषिनीः प्रहा हाना सतृपात्माः



वन्दे हं मा उदाय नीः॥ हं कात्र पत्र मंद वः हं कात्र सिद्धि लंजनंः हं कात्र वः उः  
न्यः हं कात्रायं उ न मा स्तुते॥ • ॥ ~~य न मः स क न~~॥ उं न मः श्रवः ण्डी काय॥  
विन्दुं रुं रुं म श का आ सिः धुं गं शु का त्रुं नि लं उ ग वः डा ग रुं द वीः न प्रः  
यं न मा स्तुते॥ • ॥ ~~यान~~॥ उं जी अं हं ह म ह म त्रु वि द्य ना सा य हं रुं रुं स्या हा॥ • ॥  
~~धुप~~॥ उं स या गि नी सिद्धि ला कं अ व ग त र् अं हं रुं रुं स्या हा॥ • ॥ ~~स य वः स~~॥  
~~स्वान~~ वा य॥ उं रुं रुं रुं च डि का य स्या हा॥ उं उ ग वः रुं न मः स्या हा॥ उं व डि का य न  
मः स्या हा॥ उं दि य त्रु पि न्ये न मः स्या हा॥ उं सिद्धि या गि न्ये न मः स्या हा॥ • ॥ पूजा

॥ यो ॥ मा ॥











शुद्धिस्तु सशुद्धि इह वक्ष्ये स्था नसि जयय जाध्वजध्व मानीक

लास्यास्तुति॥ • ॥ **स्तुति** ॥ उं उक्तायनी हंसमात्रा कनकवर्णसुखमिति नः ॥  
उत्सुकताध्वयः प्रकाशयती नमास्तुते॥ • ॥ **वलिमिया** ॥ उं उं कालबीज  
संज्ञागं पूर्व उक्तायनी ॥ उं दं वलिः गृहं रं रं रं रं स्वाहा॥ • ॥ **उत्तरसंकन** ॥  
उमस्तु पूर्व कपातं चः नर्प्यं तं सुत्रातिं उमा गोडाध्व बाहया दधी ध्वन पूषं नमा  
स्तुते॥ • ॥ **ममका** ॥ उं उं उं उं ह का गगिनी अगु विष्णु नाशय हं रं रं ॥ •  
**ध्व** ॥ उं उं १ गोडा यनी गोडा कां उव न त २ श्री उं हं रं रं स्वाहा॥ • ॥ **ध्व** ॥ उं श्री  
जायनी उव न व ध्वः वृष बाहनी ॥ उ कवका च उ रं रं मूल रं रं रं रं विन्दु पात्रं च

॥ रवध्वक  
री ५१५  
नी ॥ २



१ गायत्र्यामान कांयगजा वाकसमधी नयीकां जाउं  
अपत्ररुजाकांठकवत्रदपि शुभं • ॥ ~~सुगुणसुखा~~ ॥ • ॥ ~~सुगुणसुखा~~ ॥ उं हं रुठ  
श्रीदायलीन • उं • श्रीदायनमः स्वाहा ॥ उं त्रुडच लु नमः स्वाहा ॥ उं  
कृवेलायनमः स्वाहा ॥ उं पूना गवुजायनमः स्वाहा ॥ उं गं रयालनागनाजाय  
नमः स्वाहा ॥ उं का लो गिलीकृतायनमः स्वाहा ॥ उं कं तं कं तं जम जम नायनमः  
स्वाहा ॥ • ॥ ~~पूजाकांसासुगुणि~~ ॥ १ ॥ ~~सुगुण~~ ॥ उं श्रीदायलीवृषमात्रुयवत्रदपि शु  
त्रक्षत्रिली • उं वनवर्षसुगुणसंगिः श्रीदायलीनमासुगुणः ॥ • ॥ ~~वलि~~ ॥ उं कं का  
त्रवीकसंजागं • उं तं तं श्रीदायलीसर्वश्वगनां • उं देवलिः ॥ गृ. रु. २ स्वस्वस्वाहिर







१ कर्क विलसान श्रुता स्थापना जायप्रति मंजा मृति  
 उं वद्विदेवगायनमः स्वाहा॥ उं कलंजवृकायनमः स्वाहा॥ उं ऊं हहासकृपायन  
 मः स्वाहा॥ उं उं मरुपायनमः स्वाहा॥ उं पमनागगाजायनमः स्वाहा॥ उं ल  
 मी वनसमंशनायनमः स्वाहा॥ • ॥ यूजातास्यास्तुति॥ • ॥ स्तोत्र॥ उं का  
 मात्री मयूत्रागृताः गकिहला कगागुलाः गकवक्षीस्तुष्टांगिः कोमात्रि  
 वनमस्तुते॥ • ॥ वलि॥ उं चकात्रवीजसेजागंः ऊं न कोमात्रीयपुलिपय  
 ०० दम्वलिः गृह्ण २ ययव्याहिर कीमात्रीयहं रुठ स्वाहा॥ • ॥ येज्यस  
कतन॥ उं गजावकृष्टं विन्ः पमपजामतं एवः वेष्ट्वां वाहयादवीध्वा

॥ इति कथा ॥ वेष्ट्वा वि ॥ ४



नमो नमो नमो ॥ • ॥ मन्त्राय नमः ॥ उं श्रीं गुरुं हजयन्ति कुण्डविष्णुनाम्नयः  
 हं रुं ॥ • ॥ ॥ उं ४ वेङ्कटी विष्णु लोकं अवगतरन्ति पुं हं रुं रुं स्वाहा ॥ • ॥  
 ॥ उं वेङ्कटी विष्णु मन्त्रः गुरुं सनी ५ क मूखा ॥ ॥ नमो वतु उं ॥  
 मूलरक्षायां गुरुं वतु ॥ • ॥ स्वरावसु ॥ • ॥ स्वानवाय ॥ उं रुं  
 रुं ४ वेङ्कटी नमः ॥ स्वाहा ॥ उं उं लवाय नमः ॥ स्वाहा ॥ उं वीरवतु नमः  
 स्वाहा ॥ उं जेजुयाय नमः ॥ स्वाहा ॥ उं अनन्तनागनाय नमः ॥ स्वाहा ॥ उं पं  
 कतिवृक्षाय नमः ॥ स्वाहा ॥ उं उं यन्त्रिगुणाय नमः ॥ स्वाहा ॥ उं उं उं त्रयाय नमः



१ धउंसां स्या कृगु वाकसि जिह्वा सारव प्लीमधी निल  
 मः स्वाहा॥ उं धात्रा धक उम उम नाय नमः स्वाहा॥ १ ॥ **पूजा लास्या सुति॥**  
**ला॥** उं वेष्टु वी गत्रु जत्रु ता॥ जं स्व चक्र गत्रा धत्रा हत्रिग वरु सुभ लंगिः  
 वेष्टु वी च न मा सुग॥ • ॥ **वलि॥** उं ठ वेष्टु वी गत्रु ज सविः पुनि पत्य ॐ दं  
 वलिः ४ गृह २ स्व स्व स्वाहि २ वेष्टु वी य हं रुठ स्वाहा॥ • ॥ **दक्षिण सकें गने॥**  
 उं पा अंक सप रा त्यां च॥ त्र क काद्यं व वि नूकेंः को ला त्या वा ह या द वी ध्यान  
 पूषं न मा सुग॥ • ॥ **मद्यपान॥** उं की जं हं ह को ला मि नी उ ग वि घृ ना उम  
 य हं रुठ॥ • ॥ **धूप॥** उं ठ वा त्रा ही र ग ला केंः क्व गत्र २ जं घुं हं रुठ स्वाहा॥

॥ जडो ॥  
 वा रा ही

५



ॐ वाग्राही त्रकास्य ह म व द नाः ॥ ३ ॥ क मूर्खाणि नृणां च तु र्हाजाः मूलर  
जाणां विन्दुपात्रं च ॥ ४ ॥ यत्र रजाणां स्वप्नं कुरुते कश्चिन्मीमांसायां वा हली ॥  
॥ • ॥ **स्वरायस्वरा** ॥ • ॥ **स्वानवाय** ॥ ॐ रुं रुं ठ वाग्राही नमः स्वाहा ॥ ॐ कपा  
ल लेल वाय नमः स्वाहा ॥ ॐ बीजय च ॐ नमः स्वाहा ॥ ॐ यमदं व गाय नमः  
॥ स्वाहा ॥ ॐ कृतिक नागना जाय नमः स्वाहा ॥ ॐ ३ कास्य त्रक गाय नमः  
स्वाहा ॥ ॐ मोननाथाय नमः स्वाहा ॥ ॐ वृगवृजाय नमः स्वाहा ॥ ॐ गकः  
त्रयमथ नाय नमः स्वाहा ॥ • ॥ **पूजा लोकास्त्रि** ॥ • ॥ **स्त्रि** ॥ ॐ वाग्राः

लउं जिह्वायां स्थावज्जी रुं सयथा स्वाहा अयथा मयी जाडान







[illegible]

ॐ ह्रीं क्लीं उमसि पादशुभा जायपति बालसा ॐ शिष्य



॥ स्वयं क॥ नमः संनिता वत हस्त धरा देवी ॐ नमो यती नमस्तुते ॥ • ॥ वा ॥ उं ऊ व  
 कू पा कू स ॥ स्म अ न ली ला देवी सहिता यः पु लिय स ॐ द म्ब लि ग कू र हूं रु ठ स्वा हा ॥ • ॥  
 य। ५५ वायू वा कू न ॥ उं वा पु च म्म क लि व वं स्व अ रु ठां क वि न्द्र कं वा मु षु वा हा या  
 देवि स्नान पू ष्ये न मा स्तु ते ॥ • ॥ म ध पा न ॥ उं क्रीं अं हूं रु ठ देवी का ठ वि घृ न्ना  
 अ य हूं रु ठ ॥ • ॥ पू ष ॥ उं य चा मु षु कं का न त्रु पं अ व न त र अ धुं हूं रु ठ स्वा  
 हा ॥ • ॥ वा न ॥ उं वा मु षु न क व क्षि कू वां गी प्रे गा स नी पिं गा ऊ कं जी उ क  
 व का च उ र्जि ता मूल उ जा लां वि न्द्र पा उं व अ प त र जा लां क लि क पा ल मृ गं

पुदमास आलापति हल नला मधमवा उहासी निल



प्रदमास आलापति हल उला मधमवा उहासी निल

वा॥ • ॥ **स्वरावहृदा** ॥ • ॥ **स्वानवाय** ॥ उं हं रुं चाम् काय नमः स्वाहा ॥ उं संहाल  
वाय नमः स्वाहा ॥ उं हं का लच उ नमः स्वाहा ॥ उं वा युवा य नमः स्वाहा ॥ उं दवी  
का ठ न कु ग य नमः स्वाहा ॥ उं उ र्म त र द काय नमः स्वाहा ॥ उं वा ल सु कि ना ग  
ग काय नमः स्वाहा ॥ उं सि धि ना थ य नमः स्वाहा ॥ उं कि लि कि रा स म ना  
य नमः स्वाहा ॥ • ॥ **पूजा ला स्या रु मि** ॥ १ ॥ **का** ॥ उं चाम् पु ग मा तू टाः  
क र्ति क वा त ध त टीः कु षां गी कू त तू पी च चाम् पु य न मो रु गे ॥ • ॥  
**वा** ॥ उं वा युवा चाम् पु कं का ले तू प ध त्री द वी पु लि प रू द म्य लि गू र

ॐ ॐ मा र्ग न मा ष मा न्ता दि रु ल म च प क्कान य रा सर्वा प क ज न स हि ना य  
ॐ वै पू जा सं प दा ष या म्य हं ग रु ल प ज म्य ष्व ल ॥



॥ डाचके कुजा ॥ मराल की ॥ ✓

[illegible]

ॐ ॐ मादग्धमासजक मध्व पक्वान हलमूलसुकम्यलसुवापुम जलस  
हि नाय ॐ दपडासंप्रकाष्याम्यहं गृह्णत्वपलममलं ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥



इत्थं वा स्यात् सुकमल स्यात् पात्नीजास्वी रुजा  
हं ऋग्वेदे नमः स्वाहा ॥ उं ॐ अत्राय नमः स्वाहा ॥ उं वलिनकुत्राय नमः स्वा  
हा ॥ उं वठकवृत्राय नमः स्वाहा ॥ उं गठक नागत्राय नमः स्वाहा ॥ उं मः  
हा पत्र नागत्राय नमः स्वाहा ॥ उं ऋदहासमम नाय नमः स्वाहा ॥ • ॥  
**पूजा लास्या सुति ॥ • ॥ एता ॥** उं महा लक्ष्मी सिंह मातृता कपाल स्वप्रक्षी गोति  
ति न्यत्रा सोम्य तृपीचः महा लक्ष्मी नमो सुग ॥ • ॥ **वलि ॥** उं ॐ अत्र च विदुदवी  
क्रमवक्ष्यः ॐ दमलिगृह २ स्व स्व स्वाहि २ सर्वसुतादि अन्तिके कृत् १ पूर्णिकृत्  
उं ऋ १ हं रुठ स्वाहा ॥ • ॥ **पुनर्वलि विधय धन ॥ • ॥ धन गदा सः कृमातः म**



ॐ कालयूजा ॥ स्वरावसूजा ॥ • ॥ **स्वानवाय** ॥ ॐ गंगलयगयसाहा ॥ ॐ गलधिय  
नयसाहा ॥ ॐ गलज्जनायसाहा ॥ ॐ गलपतिपूजिगायसाहा ॥ • ॥ ॐ स्कंध  
यसाहा ॥ ॐ कुमात्रायसाहा ॥ ॐ अकिंधत्रायसाहा ॥ ॐ मयूत्रबाहनायसाहा ॥  
ॐ मंसाहाकालीयसाहा ॥ ॐ कलालीयसाहा ॥ ॐ कंकालीयसाहा ॥ • ॥ **पूजा**  
**स्यास्तुति** ॥ • ॥ ॐ गलपतिज्वहलमविधिनाजायनायकः सर्वविधिहरेन्द  
वगजवकुं नमोस्तुते ॥ • ॥ कुमात्रं पत्रमंदवः मयूत्रा पत्रिसंस्तिगः नित्यकु  
मात्रस्य गृयायः कुमात्रं पुनमाम्यहं ॥ • ॥ ॐ ध्रुमां धात्रं त्रयं सापि विदेहाकुपिथ



तच्छुक्कः कुमादेश्च गवात्रुः महाकालं न मा म्यहं ॥ • ॥ वलि ॥ • ॥ धन ॥ इति  
कपात्रपूजा ॥ • ॥ स्वर्गसूत्रा ॥ • ॥ ह्यानवाया ॥ उं हूं न्दाय पीतवर्णस्य त्रेत्रावतः  
बाहनाय नमः स्वाहा ॥ उं हूं न्दाय यत्र कवर्णस्य गजिहस्ताय नमः स्वाहा ॥ उं हूं  
न्यां धर्मत्रायाय महीषबाहनाय नमः स्वाहा ॥ उं हूं न्दाय त्रैलोक्याधिपतये कृ  
तवर्णस्य पुनः पुनः नमः स्वाहा ॥ उं हूं न्दाय पांचवर्णस्य जितवर्णस्य मकर  
बाहनाय नमः स्वाहा ॥ उं हूं न्दाय यवनाधिपतये हस्तिवर्णस्य पठाकहस्ता  
य नमः स्वाहा ॥ उं हूं न्दाय पीतवर्णस्य दंष्ट्रहस्ताय नमः स्वाहा ॥ उं हूं न्दाय



नायजितवस्त्रियः प्रिञ्जलहस्तकायवृक्षासनायनमः स्वाहा ॥ • ॥ दण्डकाठ  
 यागः स्वा नवाय ॥ उं यन्माककायनमः स्वाहा ॥ उं प्रह्नुककायनमः स्वाहा ॥  
 उं पश्माककायनमः स्वाहा ॥ उं विद्याककायनमः स्वाहा ॥ उं ऊर्ध्वत्रायनमः स्वा  
 हा ॥ उं गङ्गिकाकायनमः स्वाहा ॥ उं नीलदभुयनमः स्वाहा ॥ उं महावलायन  
 मः स्वाहा ॥ उं उक्तिवचकायनमः स्वाहा ॥ उं सुकृताकायनमः स्वाहा ॥ • ॥  
 पूजा लास्यास्तुति ॥ • ॥ ह्रीं ॥ उं ह्रीं उ ह्रीं त्रयमिष्टे व ऊर्ध्वनिगताधिपारवः ऊ  
 मापुताधिपगर्ध्वः नैऋत्यताऊसाधिपः नागाधिपवत्सुभ्रताताः काय्यापुव



नाधिपसुधः कृष्णराजकाधिपतुर्वेवः ॥ १ ॥ अनाधिपं नमोस्तुते ॥ • ॥  
उंसाध्याहृदि दलुक उववतू ॥ जीगाहत्रपावकः कयादीयवनात्रविजस  
धत्रावसासुगाहृदिः ॥ तावैदअदिगधिसहग ॥ इकाचमात्रादयः कीठा  
सत्यप्रकीर्तयन्ति सर्वजगताः विद्याप्रभुम् ॥ • ॥ उंयमाककीमहावि  
त्रं प्रज्ञायथाविद्याचलागर्हिनाजंकाठतूपः नीलदलुमहावीरः उफिरवस  
कनाजंनुदजकाठं नमोस्तुते ॥ • ॥ धनदिगवलिविय ॥ • ॥ स्वांसमय  
विं कं अलिस्वांसमरु ॥ वलिविय ॥ • ॥ उं ॥ १ ॥ ताकासहाताजाः लाकपा



[illegible]



ॐ हं रुठ स्वाहा ॥ ४ ॥ उं विद्या नकुत्स हा कोरु महावलपता कुम ४ ॐ दं व  
लिं गुरु २ रव रव स्वाहि २ गि ४ २ व ४ २ हुन २ गुरु २ सर्व विद्या नकुत्स दं २ रं दं २  
कुग २ दह २ पच २ मध २ उं ४ ॥ विद्या नकुत्स गुरु २ रुठ स्वाहा ॥ **विद्या नकुत्स वलि ॥**  
॥ ५ ॥ **उं महा काल वलि ॥** उं नम ४ श्री महा कात्राय सा स नो य कात्रि ॥ य  
दि प्रहा स मत्र सि काः कालि कला लि वे गालि च ४ ॥ लि सिद्धि या गि नी ४ ॐ  
दं वलि ४ गुरु २ जी ह ४ हं रुठ स्वाहा ॥ ६ ॥ **वन्दु महा गो व न वलि ॥** उं नम  
ह ग व ग वन्दु महा गो व न यः दे वा सू त न त सं ग्रा स न क रा यः स क त मा जः



विनासनकनायः ॥ सिकुसुमवपुष्प ॥ अक्रुत्यकृगजवत्रधनायः ॥ ०० :  
दंबलिः ॥ गुरुः सर्वविद्यां हन ॥ च ॥ उर्मागानुनिवात्रय ॥ अतय ॥ अमये ॥  
किउरलिउरनाय ॥ अय ॥ अय ॥ अय ॥ अय ॥ अय ॥ अय ॥ अय ॥ अय ॥ अय ॥  
नममवित्रुकातुलसिकुतुहंरुठस्वाहा ॥ १ ॥ **वसव्यवलि** ॥ ०० नमः ॥ अः  
स्वसर्वभयः ॥ ऐलाकदर्वभयः ॥ अकागुविनायः ॥ सकलतागदात्रिद्रा ॥ ३४ स्व  
इतिगागुगमाभयः ॥ ०० दंबलिः ॥ अदिसदिगसुप ॥ अं ॥ अं ॥ अं ॥ अं ॥ अं ॥ अं ॥  
कुरुमः ॥ कीहंरुठस्वाहा ॥ ८ ॥ **अत्रपंचमवलि** ॥ ०० अत्रपंचनायः ॥ कसगिदह



नदक्राय. चउ कानिमसिप्रराय. खअ प्रलक वग्रहसाय। मंई वानी वत्र  
पुदाय. मंई बुद्धि सिद्धि दाय. ॐ देव लिं पुष्पा. ५ पंदी पं मा. नरक नादिसहि नं  
नृक २ ख ख खा हि २ म म अ किं कू नृ पुष्पि कू नृ त्र का वत्र न गु पिं कू नृ उं आ १६  
धी १ हं रु ठ स्वा हा ॥ ६ ॥ **मृजं वच निता ता सा ध न वलि ॥** उं न मा र ग व मि नृ  
वं च निता त. का गा का ल ह न. सर्व दा त्रि उ ३ ४ ख ल य ह न. अ व म हा दा नृ लिः  
र य ल १ ख आ उं न पा इ का रु उ घ दि. सिद्धि द दे ॐ देव लि यं चा नृ नादिसहि  
न नृ क २ उं आ १ हं गा त्र उ का त्र स्वा हा ॥ १० ॥ **इ मी ता ता वलि ॥** उं ता त लि सर्व



३४ खल्यहत्रसि. चतुर्मात्रमिन्नात्रिसि. सर्वदवा सून. गन्धर्वकिन्नर. महात्र  
गाउपडुवप्रसर्द्धसि. एतपुनपि जमच. यऊताऊस. जाऊजकि. न्यादि हय.  
विधंसिसिपत्रक. यऊमनुप्रयागविना जनि. एतवमि दुर्गा त्रात्रिसि. आ  
गक २०० मंवजिं गृह २ मम सर्वजग्न नह न २ खादि २ सर्ववैश्वनं व्याधिगुहा  
नृदह २ कंदय २ एद य २ माठय २ स्फाठय २ सर्वसिद्धिप्रयक. जमकिंनर जा  
कृत् सर्वसत्त्वानव जमकृत्. सर्वकत्रिकलहविग्रह. विवादविघ्नोत्पादवापिक  
तान्. किन्नर रिन्द २ एंजय २ औएय २ स्फं मय २ औ २ हं २ उं आ १ हं रुठ स्वाहा



३

॥ ११ ॥ महाजिगात्रावलि ॥ उं महा अथ ग्रंथं कीं उं ॐ दं वलिं ॥ ऐलो क सं सात्र यः  
 दात्रि अ ग ज वि दा त म यः सर्व इ क पु इ क न रं ज य र ॥ अ ग क २ र ग व गिः म मः  
 नि चं द हि द दा प य हं रु र सा हा ॥ १२ ॥ ॐ महा ए य ह त म ना त्रा व लि ॥ उं  
 ए ग व गि ॐ क महा ए य ना त्रि सिः ॥ अ नि पु षि व षं का त्रि सिः प त्र म नु ज नु वि ष  
 पू र्ण वि ना जि निः महा आ रा ष्ठ री म म सर्व स त्वा नां चः त्र कां कू रू ॐ क महा दा  
 त्रु ष र य त्या ४ ना त्र य र दि व्य त्र पि नीः सो म्य मृ रिः ॐ दं व लि गृ ह २ र य र य र  
 हि र सा हा ॥ १३ ॥ पु स न ना त्रा व लि ॥ उं पु स न ना त्र ॐ म ग मृ रि ॐ म ग लो च



[illegible]



सिद्धिचक्रवर्जयासिनाहापयमित्याहा ॥ १६ ॥ **धंजंगकयुत्रिवलि** ॥ उं न मा  
हगवगधंजागुकेयुत्रजय२विजय२विजयवाहनि. मम सर्वजगंज म  
य२रुमय२ममसर्वजगंजुमथ२गुस२त्रकायय२पुत्रय२काजममरग  
वगि. महावजगा. अत्रिसिद्धि. त्रु२मां हगवगि. मं वलिं गृह्ण२उंज२य  
त्रसेन्यविधं सय२मममं वृ२ विलि२रि२त्रि२उ२रकल२किलि२ः  
कृ२२सर्वगधगगावलोकिगस्याहा ॥ उमत्राउपरासस्याहा ॥ वडाकृविमत्र  
स्याहा ॥ सवत्रउवसीकत्रस्याहा ॥ त्रु२गधगगल२स्याहा ॥ १७ ॥ **उह्यवि**



**जयावलि** ॥ ॐ नमो नमो गवमिउ वी वविउ य मृत्तं उ य मममृत्तं ना गय २ विना  
अय २ ०० दम्य लिं गृह २ दी र्घा युक्कं म कृत् २ ०० २ ०० अमि म कृत् २ ०० २ ०० ॥

५ ॥ १८ ॥ **गृहमातृकावली** ॥ ॐ नमो नमो गवमिगृहमातृकाय सर्व न कुप्रलयना  
जिनिः सर्वदयना गयजादि रययूप अमलि त्राज सोत्रादि रयविधं स लि गृह  
मातृकः सर्व न कुप्रदि रि ४ आद्यं जाग कृ २ ०० दं वलि गृह २ मम सर्व विद्या न ह  
न २ अमिं पूष्टिं वम कृत् २ ०० २ ०० २ ०० ॥ १९ ॥ **पुण्यंगितावलि** ॥ ॐ नमो नमो  
गवमि महापुण्यंगिताय सर्व सूर्य अमि कृत् ०० ०० जिनि या ज न गग सह पु कृत्



ॐ दं वलिं पूषं धूपं दीपं गुरुं २ जनकं नचि त्समकृगं मनु गनु जनु विषवृक्ष  
गपुया गादिकं कृगं कात्रिगं गत्सर्वं हन २ दह २ पच २ मथ २ गजी २ गज २ गस्येव  
ममकं निपतनु स्वाहा ॥ २० ॥ **पंचत्रयावलि** ॥ ॐ महासाहस्रपुमर्द्धनिः विः  
यात्राहि सर्वगं लिखात्रलिः मम सर्वसत्त्वानां ॥ ॐ आर्यमहासायुत्रिः महावि  
यात्राहि सर्वविषपुसमधिः मम सर्वसत्त्वानां च ॥ ॐ आर्यमहाशीगवणिः सर्वइष्ट  
पुमर्द्धनिः मम सर्वसत्त्वानां च ॥ ॐ आर्यमहापुगिसत्रमहाविद्यात्राहिः सर्ववि  
याधिपतयः ॐ आर्यमहासन्तानुसात्रिनिः सर्वकुपदवनाशनिः ॐ दं वः



लिं ग २ म म सर्व सत्त्वा नां च ॥ अ भि कृ त् पू षि कृ त् व षं कृ त् सर्व इ क सत्त्वा न्  
मा त्र य २ जी ह ३ हं रु ठ स्या हा ॥ २१ ॥ **सा र्थ क वि क व लि ॥** उं उ मा या द व गा ३ स  
र्व षं डा या लो क ना य का ३ ना ग ग न्ध र्व य का ष च ॥ १ ॥ य नु व लि ना स दा ३ ष  
का त्रा मूर् खं सर्व ध र्मा य नू त न ला ॥ ३ ॥ उं षा ३ हं रु ठ स्या हा ॥ २२ ॥ **सि डि क वी त्र**  
**व लि ॥** उं सि डि क वी त्रा य वी त्र ण य ॥ कृ त् ण य ज ल ह द या य ॥ नी त्रा त्प ल ह द  
स्या य ॥ ३ ॥ द व लिं ग ही त्या य उं ष ॥ म म सर्व सत्त्वा नां च ॥ अ भि कृ त् पू षि कृ त् स  
र्व सि डि कृ त् हं रु ठ स्या हा ॥ २३ ॥ **अ कृ त व लि ॥** उं न मा त्र त्र य य ॥ न मा मा

**उं रु ष**



लि एडा यः यकु स्य नाधि पग यः उं उ ह्मि मज कुल जले नुः ॐ दं वलिं गुरु र एवर  
रवा हि २ महा बलं स देहि ददा पय स्वाहा ॥ २४ ॥ **पि अम च प म स व त्रि व लि ॥**  
उं पि अम ची प म् ज व लि ॥ सर्वा पि दु व ना ग निः सर्व प्रा गः पु म म निः सर्व ते य  
वि ना ग नाः ॐ दं वलिं गुरु र एवर रवा हि २ सर्व इ क मा त्र य र गुरु र व न्ध र ह  
न २ द ह २ प च र मा त्र य र हं रु ठ स्वाहा ॥ २५ ॥ **सा र्व लो गि क व लि ॥** उं ने न्दा उ  
व की स ह र ग सं धेः त्रि मं च गुरु र नु व लिं वि जि कं ॥ अग्नि य मा नं मृ त्रि मि रः  
प मि उ च ॥ आ पां प मि वा शु ध ना धि प उ च ॥ ॐ ग म न र ग ना धि प मि उ च द वाः उ र्ज

२



कैवडाकपिनामह उवदयाः समस्त सुविषयनागा धनाधनाशु कगलेः सम  
ताः पुमिपुमिपुमि कविद नच स्वक स्वक उवेवदि जम सुसताः गुरुकुशुकाः स  
वलाः ससेन्याः सपुगमिद स्वडनेः समताः पूष्यवलि धूपनिवद नच गुरुः  
कु रजकुपिवकु वेदमिदेचक म् सुरुलेश वकु हं रुठ स्वाहा ॥ २६ ॥ अह  
महि ॥ ~~उं नमः स सममकु~~ ~~नागवलि~~ ॥ उं नमः स सममकु  
कायवाकविगुपः ॥ अ न नुवा सुकिगकु क क क गिकः य म म हा य मः जं र पात्रः क  
लिकः उयविज यादि पो न्य पो म हा नागनाजा एः स प ही क एः स प त्रि वा त ए



[illegible]



८

कं कुडि व कु उ उ कु त्या द कु पि व कु ह का ए त्या म म सर्व स त्या नां च यु र्व ल व र्  
मा त्रा ग्धं अ किं पू षिं धु गिं प्री मिं च द द धं सर्व दा हं र रु ठ व ज ध त षा ग्ध प य मि  
स्या हा ॥ २८ ॥ **गु ह व लि** ॥ उं ज्हा हं ता हू का ला मि च उ सूर्य मंग ल वृ ष्ट वृ ह  
त्य मि कु क ज नि ज्व लः क उ ए स प नी के ए स प त्रि वा त ए ४ रु दं म र्च या आ  
व म नी यं पू षां धू पं दी पं व लिं च दा स्या मि सं प्री त्या ग कं कु डि पु कु उ उ कु त्या  
द कु पी व कु ह का ए त्या दा न प ग ४ सर्व स त्या नां च यु र्व ल व र् मा त्रा ग्धं अ किं पू  
षिं धु गिं प्री मि च द द धं सर्व दा हं र रु ठ व ज ध त षा ग्ध प य मि स्या हा ॥ २९ ॥



दण्डाटवलि॥ उंका ४ हं हा यमा न क प्रहा न क यमा न क विहा न क ठ कि ता  
ज नीलदलु महावल ऊबल सुक ताज उ। श्री वल दण्डाटव सप्रहासः  
प त्रिवात्र ल ० दं मर्घ पाशा य मनीयं पूषं धूपं दीपं गन्धं नैव घं वलिं  
वा उ उंददा महं गवाग ल संप्री लार हनु जिपु नु र्याद नु पिव नु हृष्टा स  
ला मम सय त्रिवात्र स्या पूर्व लव र्क्ष मात्रा गंधं अनिपूषिं धर्मि प्रीतिं च ददधं  
सर्वदा हं २४ वज्र धना ज्ञा ज्ञपय मि स्याहा ॥ ३० ॥ **सर्वदण्डवलि॥** उंका  
४ वेगालि विक्क गामूख उलूक मूख सुक मूख जाक मूख पुक न मूख ग



धर्मस्यः याद्युर्मस्यः गत्रुर्मस्यः सपत्नीकृत्यः सपत्निवात्रस्यः ऋदंसर्व  
 पायाचमनीयं पूषंधूपदीपवलिचदास्यामिः पुण्याः गुरुकुं उद्युक्तुः पिवक्तु  
 ह्युत्थाः ममसर्वसत्यानां च युवर्षवतमात्राद्यं जमनि पूषिं धर्मिं प्रीतिं च  
 ददधसर्वसदा हं रुरुठयउ धराणा ह्यपयमि स्वाहा ॥ उं य केचिदिहस्तान्ये  
 दवदानवगणः गन्धर्वराक्षसः महात्रगः मनुष्याः मनुष्याः पुनापि जमचः ॥ ७ ॥  
 कजाकिनीमारुग्रहः पस्मात्रकाः सर्वहृगगणः स्तावत उंगमाज्वः न  
 सर्वः ऋदं वलिं गुरुकु ममसपत्निवात्रस्यः सर्वसत्यानां च जमनि पूषिं त्रजाः



५

वत्रलुपिं कुरुवन्तु उज्ज्वा ४ हं रुठ स्याहा ॥ ३१ ॥ **सायाजिकाना सर्वलोम**  
**कवलि** ॥ उज्ज्वा ४ दण्डादिग्यवक्तिगण्य ४ नय ॥ वजायूध ॥ वज्रकाल ॥ नाग  
वज्र ॥ वज्रहेलक ॥ वज्रानल ॥ वज्रमुखल ॥ वज्रानिल ॥ काठवज्र ॥ मीलवज्र ॥ पृ  
थिवीदवतागल ॥ सपत्नीक ॥ सपत्नियान ॥ ४ ॥ नय ॥ उदव नागयज्र  
गन्धर्वसुतग ॥ ७ ॥ किन्नरमहातगरग ॥ पिण्डसोलादाप ॥ सातठा ॥ सातका  
दियावलि ॥ वदाप ॥ यामि ॥ ७ ॥ दपू ॥ धूपदीप ॥ गन्ध ॥ नय ॥ दिसंयुक्त ॥ गहीला  
सोमनस्यलारि ॥ नारवन्तु ॥ सान ॥ चनि ॥ रूप ॥ डव ॥ कुरुवन्तु ॥ सर्वदा ॥ चि ॥ सान ॥ न ॥ ४



ॐ ज्ञा ४ हं ४ दं म म ग पि नू ॐ काम म सर्व सत्त्वानां ॐ कि क्व च तु त्वस्ति स्वाहा  
 ॥ ३२ ॥ **ऊ ७ वा न वलि** ॥ ॐ ज्ञा ४ हं हा ४ ४ हा वलि न त्वा हि ऊ ७ वा ले पो ३ न  
 त्या ३ पि ४ दं वलिं गृ हं पू षं धूपं चा ऊ ७ द दाम हं ग वा ग त्व स प त्रि वा ना जा व द  
 ला ७ पिं कृ त्र व तु हं २ व जे ध त्र का ह्या प य मि हं रु ठ स्वा हा ॥ ३३ ॥ **पु न वलि**  
 ॥ ॐ म म ४ त्र त्र पा य ग थ ग ग या हं क सं म्प क्क वृ द्धा य ग य थं ॥ ॐ मू त्र २ ७ त्र  
 त्र २ ग त्र २ स कृ त्र २ सं क र्ष य २ त्र य प्र ग नां स्वा हा ॥ ॐ ४ प स त्र तु र व ना त्र पु  
 जि ह्म द दाम्य हं सर्व ला क ध्म उ नि वा जि नां पु न ना ना हा त्र मि मि ॥ ३४ ॥



कामराजयलि॥ उं हं ५ की हं ५ ४ गुरु २ व लिंग क पुष्पा कामराजसिद्धिपुय  
ॐ ममयि त्रुद्धिचिन्मकान् रसीकृत्सफपातालगगसर्वजपुनपादगनं  
कृत्सर्वजनाय नमः किंकृत्तुहं रुठ स्वाहा॥ ३५ ॥ **नकजमात्रयलि॥** उं नक  
सुकुठाय नकजठाय नकमूलाय नकजरीताय नकपुजाय नकहाता  
यलिमात्राय नकत्रयसमात्रुठाय नकारतयविरुषिताय वूदं यलिः  
गुरु २ ममयिद्यानहतर २ वपुमात्रान्त्रिवात्रय २ गस २ गामरुक्ति २  
रिन्द २ नाग २ गाप २ लम २ रुद २ रुद २ रुद २ रुठ २ स्वाहा॥ पञ्चम



[illegible]



क  
२

त्रिल सर्वपकत्रमसहिगायः षगमिदावजमन्तर्धं उं ञ् ४ हं रु ठ स्वा हा ॥  
॥ ३७ ॥ उं यमाककायसमलीषमयः क्रो ४ ङो ४ वि रु गान नायः नो गा  
रतमयः गे ला क विमर्दनहसायः सर्वमालवलयिना ग नायः ॐ देव  
लिं ग २ म म सर्वविद्या नृ न २ व उ मा गान निवात्रय २ हं २ रु ठ स्वा हा  
॥ ३८ ॥ कलूकलावलि ॥ उं ञ् ४ हं क्रो ४ कू गू कू ल सर्वसत्यवस्ये कतिः स  
र्वरय रयं कतिः ॐ देव लिं पू षं धू पं दी पं चा क्र गं द दाम्य हं सर्वदेव ना ग  
य क्र ग चर्वा सूत ग गू उ कि न्नः महात्रगा दया यथेव यथे कं उं ज धपि



वधः स्वादयः जिह्वंथमममनः सिद्धिप्रयच्छुधः उंज्झाः डीः हंरुठ स्वाहा ॥ ३८ ॥  
॥ ३८ ॥ उंभुक्कहिभुक्कजठनमोपनीगानां गभकिं कृत्तुपुष्टिं कृत्तुः महाये  
जाविपनयः ७० दंवलिंगरु २ गृजापय २ पत्रविश्यामा कर्षय २ युग २ कुंद २  
हृद २ उंज्झाः हंरुठ स्वाहा ॥ उगुगाराभुक्कजठनवलि ॥ ३९ ॥ उंभुक्कहिभुक्क  
उफत्रवलि ॥ उंवर्ज्यामिनीडीः ७३ स्वरुं २ ७२ मममनः सिद्धिप्रयच्छुधः वलिंरु  
रु २ हंरुठ स्वाहा ॥ ४० ॥ उंभुक्कहिभुक्कजठनवलि ॥ उंसर्वगधगगसमयमनुस्मन  
हंरुठ स्वाहा ॥ ४१ ॥ उंभुक्कहिभुक्कजठनवलि ॥ उंनमारुगवलेनकनेगयेः महा



चतुर्विंशपाद्यः समस्तैर्गणैः सर्वगानि संकाशय २ तंजय २ माठय २ तगव  
गिवज्जगत्सर्वं त्रैलोक्यं पादनाकाठय २ चक्रवन्धः जित्रावन्धः सर्वगानि वन्धः  
गालय २ मात्रय २ पूषः धूपः दीपः बलिः गुरु २ हंरुठ स्वाहा ॥ ४ २ ॥ ठंठ गिः  
दधूपदात्रमात्रिकासमाक ॥ ० ॥ धनः पंचावदात्रपूजा ॥ समयकायः  
धनमयिच ॥ यद्यस्मीयापादि ४ ॥ धनदगुलियवियिच ॥ ० ॥ धनवूषि  
पूजा ॥ उं संहात्रदवीरुतात्रकएवजसि चत्रं पुनिकु स्वाहा ॥ पूषा स्वाहा ॥  
यद्यस्मीयापा ॥ उं मायना ॥ दडि ॥ ० ॥ बाहो न पूजायाय ॥ उं गुन्यमय



2676

SEMPER PARVUS

五



स्वायं॥

जगत्सर्वं शुभं नाकत्रुत्तम एव हि त्वा इति एतु न सुखाय न न वा प्रयातु ॥ • ॥

उं ड्रीं ड्रीं का गा य ड्रीं ड्रीं हं रुं हं स्वाहा ॥ • ॥ गायत्री ॥ का कृतं कायं ॥ • ॥ का

गहायक ॥ सुवाहू गा धम नया ॥ धम ना वा ल व द्वाय ॥ हं नमः शिव ज सत्वा

य ३ । दया ४ सुता सर्व एतं गति द्वा ४ गता सुपू ४ क १ पुठ नाव ग धव

षका ४ गृह जाय व य क वि र मो नि व स कि दि द्या ४ ॥ १ ॥ न्य क जानू

४ पृथिवी सुते हं कृता जलि विह्व य या मि ता सु दे हा । स पू ग दा ते सह रण

स ध्ये ॥ सुत्वा ४ हा या ४ नू ग हा र्थ ॥ २ ॥ य म नू पृ ४ नि व स कि दे वा ४



येनन्दत्रयसूत्रात्रयव. यथादशास्तत्रविमलुत्रय. नगत्र सर्वेष्वयव  
सन्नि॥ ३ ॥ ~~अत्रात्रसूत्रात्रयसंगमेष्वत्रात्रयाचापिकृणाचिदा~~  
सा. योपिगणत्रयव. पत्रत्रय. कृष्येष्वदीयेष्वमहानदिष्व॥ ४ ॥ ~~यः~~  
~~गामधामेष्वकाननेष्व.~~ गुन्यात्रयदवगृह्येष्व. विहात्रय. सावसथ  
समेष्व. मथ्येष्वसातास्यकृजानां॥ ५ ॥ ~~यगतरातराचिदुगृहव~~  
सन्नित्रयसूत्रयवत्त्रय. यथैकवृजेष्वमहापथेष्व. महात्मजं  
ष्वमहायमेष्व॥ ६ ॥ ~~सिंहेष्वजकु~~ विगाष्वयव. वसन्निधोगा उव



महागविषू दीपवृद्धिपू. कुगात्रयवमत्रोस्मन्मन्त्रः॥ वसुनि यच १॥  
॥ १ ॥ **हृष्टा पुस्तक** गन्धर्वमात्म्या धूपं बलि दीपं बलि विविचि अरक्या  
गुरुकुमुकुमु पीवन्मुचदं ० दं च कर्मसकलं गुरु ॥ ८ ॥ **००** उवे  
जीसहदवसंघे. त्रिमं बलि गुरु विविचि अरक्या. ०० नये अरक्या स ह पणि उच  
आपं पणि वायू धना. धिपणव ॥ ६ ॥ **००** नरका धिपणि उच दवा. स  
उद्धिचं आर्क्यिणामह उच. दवा संमगा. हवि यव नागा. धना धना गु कग  
सहस्रमगा ॥ १० ॥ **पणिपणि** ह कनि वदयं नित्य कस्य का वदि गमच ह गे



गुरु उवाच तव तस्य ज्ञेयाः श्रुतिश्च पृथिव्यकृत्स्ननित्यं ॥ ११ ॥ **पूर्व**  
**वलिः पं वलिः** नेव यदा नाशियमिह वेव मनोत्रयस्य उक्तं तु पीव नुः  
जीघृक्षु च दं दं च कर्मसंस्तुतं गंतु ॥ १२ ॥ **चक्रे कर्म** नः  
वाः पर्वतकंदं गुरुः श्रुत्वा मया उवाच धृष्टः शुभ्या गात्रविशेषतः लजन  
स्तुतं गंतु मयाः सागुंगादि विषयतः ॥ १३ ॥ **कुर्वन्नुत्तमहात्तु** दवद  
उससाहि १४ कुर्वन्नुत्तमहात्तु दवद  
निनीति स्मिन् उवाच दवी उत्तमहात्तु ॥ १४ ॥ **उवाच विजय** उवाच



श्रुतिगणपराजिताः। एतकात्रिमहाकालिः। सुलकालिउयागिनिः००  
त्रिचन्द्रिद्योत्रीइष्टितं वकिप्रददयत्री॥ १५ ॥ कांवाजिनीपिवा  
पिन्याःगामावालिगयोगिनीः। दालतूपासहातूपाः। उक्ततूपाकपालिनी  
कपालमात्मालिन्नाः। स्वहांगायसहृदिकाः॥ १६ ॥ द्युज्जहकाय  
अह्लाः। वज्रह्लाधनूरुधः। पंचजकिनिमहागलः। सर्वधम्मिनुसाध  
क०॥ १७ ॥ योगमज्जलंमहात्राजिः। वज्रयत्रीपुत्रुधः। गधगर्गम  
हाकायः। नीलंजनंउग्रुष्टिका॥ १८ ॥ दं वज्रयत्रीकाहाकावाह







ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ सदावीरं चक्रमध्वरुसंस्तिगं ॥ नानाहसन  
समूरगं चक्रनाथयगनमः ॥ ॐ सर्वलोकसकंदत्यागिनिज्ञातनायकं ॥  
श्री गणेशं नमः ॥ सर्वसत्त्वसुखयग ॥ १ ॥ ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ ॐ ॐ ॐ  
उगुचक्रं चक्राकेन चक्रिगं चक्राङ्गं श्री गणेशं ॥ हूं हूं हूं कालरूपं प्रहजितवदः  
नारवर्द्धनं जयत्रकं ॥ ॐ ॐ ॐ दधुपाणिः ॥ उमत्रुतिमितिमाः ॥ ॐ उमानानरुक्तं  
ॐ ॐ ॐ श्री गणेशं जयउविजयगसिद्धि वडुनमेरु ॥ १ ॥ ॐ ॐ ॐ धात्रं  
पं धूलिगधूलिगः धर्षणीनादधाषं ॥ ॐ ॐ ॐ हंसरूपं प्रहवनधर्षितां



उचरतु पात्रं: ॐ ॐ ॐ रतनाथं सकलज नदिनं: तस्य देहपि अथ: हं हं हं  
कात्रनाद: सकलरयहं: सिद्धि वड नमस्तु ॥ २ ॥ ॐ ॐ ॐ का म धात्र  
उमणिपुवनगा: सकल पात्रगात्रं: कं कं कं कात्रतूपं: धक निध कनिगं ॥  
ग: स्य हस्तपि गुरं: कं कं कं र्गत्रपे: उमणि चवत्रिगं: तस्य देवस्वतूपं:  
सं मुं मुं मनु सिद्धि: सकलरयहं: सिद्धि वड नमस्तु ॥ ३ ॥ ॐ ॐ ॐ:  
कात्रतूपं: उमणि उमउ मा उ यमा ना उ मस्तु: कं कं कं कात्र धात्रि: सु  
धुत्रिग धुत्रिगं: धूं धूं धूं मात्री कु मात्री ॥ धूं धूं धूं धूं मवत्सु: उमणिपुवनगा:



मैः वृष्ट्रवृष्ट्रवृष्ट्रगैः कामिनीनिलकण्ठः काकातिकात्रयापिः रुग्णविन्द



दसिद्धि वृत्त नमस्तु ॥ ६ ॥ **ॐ ॐ ॐ** काल जपः प्रपुवन नमिर्तः ध्यात  
धाता पि धातः ॐ ॐ ॐ कात्र रूपः धृष्टि न धृष्टिर्तः धृष्ट माती क मातीः धृष्टः  
धृष्ट कृमवर्धः ॐ मणि उवन गा काल दा भमि ॐ लः गं गं गं निवृत्त यः मे  
मरय हत नः सिद्धि वृत्त नमस्तु ॥ ७ ॥ **ॐ ॐ ॐ** काल नादः पयत्रि न  
मह मा वा महस्तु क पालः स्वं स्वं स्वं स्व वां ग हस्तः ॐ मरु ति मि ति मा मूत्र  
मा ता सु भरा नृ नृ नृ नृ नृ मा ताः ए व न वि रु पि गा दी धी ति का क लाले ॥  
दयी ॐ उ वृत्तः ए ग वे नि व त द सिद्धि वृत्त नमस्तु ॥ ८ ॥ **ॐ निः**



श्रीवटिकास्तुप्रसमाह ॥ • ॥ ई नमः श्रीवटिकाये ॥ वृंश्रायणीहंस  
 मातृताः पीताक्षीयातयासनीः धा रुकात्रविदुमृताचः वृंश्रायणीन  
 मास्तु ॥ १ ॥ ईमा हृज्वरीवृषमातृताः स्वगा  
 क्षीयतः वासिनीः प्रि  
 गुरुलाक विदुमृताच  
 माहृज्वरीनमास्तु  
 ॥ २ ॥





पुनः  
 नकादी  
 गकाकुवि  
 मातीवनमा  
 धेकुवीगकुः  
 हतीनवासनी गतुआकुवि  
 सुगे॥ ४

वागदी॥

मध  
 उगुवडि

मिअमी॥

॥॥॥॥॥॥॥॥

॥॥॥॥॥॥॥॥

॥॥॥॥॥॥॥॥

मातृताः  
 नकावासनी  
 इमडावःका  
 सुगे॥ ३ ॥  
 मातृताः हतिगात्री  
 इमडावः नात्रायनीनमाः  
 ठाः नकांगी धातुडिकाः मीनाडः

॥ वागदीमहीवमातृ



विद्रुमुडाचः वाताहिवनमास्तुगे॥ ५ ॥ ~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥ हमा  
हो हमासनीः चंकाडविद्रुमुडाचः माहन्डीवनमास्तुगे॥ ६ ॥ ~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय~~  
~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥ तक्रुस्तुका अरुषिताः उमत्रुयद्वागहस्तुकीः विद्रुमुन्नाव  
नमास्तुगे॥ ७ ॥ ~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥ स्थिताजी उवगवासनीः प्रिष्टुता  
अविद्रुमुडाचः चक्रुष्वतीनमास्तुगे॥ ८ ॥ ~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥  
~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



वदावहनादवीः संसात्रवागकुदनी ॥ त्वंभवसर्वसास्त्वं त्वंभवध्यानित्र  
पिनी त्वंभवसुस्ति संहात्री त्वंभवस्तिनि त्रुपिनी त्वंभवसर्वत्रुपिनी त्वं  
भवविज्वत्रुपिनी पी० ज्वत्रमहादेव देवदवीमहात्मन ॥ **ऐलवंहिः**  
षमं त्रोटं धा तंगस्ति त्रुपिनी ॥ नीलांज न निरंदहं महाकायमहा  
त्सवं नानाउजसमाकिर्त्तु नानावस्त्वरासूताः प्रितोचनमहागजा  
भूमिसूर्यसमप्रता उवनामससं च दावाग्नि समगजसाः प्रिशूलम्  
उत्पद्मिग ७ मत्रुगर्जनी धंजपात्रिजातकामूर्कवा स्वयं चर्म्मधरा उला



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यद्वा उचिगजधराः कपात्रकलिकावतं गजवर्म  
वगुधनं ॥ उक्ता कला लवदनीया प्रवर्त्मके निवृत्ता ॥ सातं कालेन सखा  
अनलासि पृथ्व्या अरिगा जीर्णमात्राधरादवी कपालाललिकालं  
वृजाममिमहागं कपालं च उरुषां महापुतासना नित्यं नृपमा  
ना सदा प्रिया सखा एन स्य गजं वक्तुं गाविन्दुवसं निरं ॥ चउपी ० स्तिगा  
नित्यं ॥ अष्टकं उचिनिवासिनीः अष्टमूर्तिस्तिगादवीः अष्टथा गिनी प्रिय  
रउपी ० स्तिगानित्यं ॥ रउकालिसमाह्वयः रउकात्रगककुलं दीनर



इं नमोस्तुते ॥ **जिगंग्रं वं चैव** यथार्थकारुहे लवंः उत्सहहे त्रवं चै  
यं कयाति हि वनस्तथा ॥ संहारत्रवे वल्लुवः हे लवाष्टं नमोस्तुते ॥ **सुखा**  
**नखा चिकारा उच** स्वस्वतृपी स्वविर्यकाः स्वस्वकार्यवृत्तं नः दिव्या  
करोतु रुमिषा ॥ दण्डि कुतुप्तालायः कुतुप्ताये वचतुर्दं पंचा ग  
कुतुप्ताले च कुतुप्ताले नमोस्तुते ॥ **नाथ नाथ महा नाथ** आदिनाथं स  
हात्मनाः श्रीनाथसिद्धिनाथं कमीननाथं नमोस्तुते ॥ कुतुप्ताथं वपी  
० कुः दीपनाथ महात्मनाः पुननाथं वरुणं वक्रनाथं नमोस्तुते ॥



सिन्धुनाथं नयनाथं कृष्णनाथं मूर्तिमः सकाविंशद्विपञ्चाशद्वीराः  
जीमिन्मालुगः॥ सर्वेषां नाथसिद्धिनां सन्नानां च कृतत्वयंः व्यागस्य  
नथवीरः नत्सर्वचनमालुगः॥ नृकाकालेऽपि कालयं यप० निनगालु  
थः पठित्वा सर्वस्वाग्रामैः प्राप्तामिष्टियमूर्तिमः॥ ~~नाथयगजभक्तचिन्ता~~  
तिः नाथयविद्युदवगाः नाथयस्तुलहं त्रार्गः नाथयद्वेदवेदवेदं॥ ना  
थय रुवदात्रिदं नाथयटिपमूर्तिमः नाथयदग्निवीरादि नाथयस्तु  
र्वविद्युतः॥ नाथयस्तुर्वविषं छात्रः नाथयदक्षिणात्रयः नाथयस्तु क



अज्ञानिः नागयस्सर्वविषाणकं, आरुता ताग्य मे उवय्य, धनधनयविवर्द्ध  
नं, धर्मार्थकाममोक्षं, य एव, जो ला ग्य मूर्तु सं, ज्ञे सिद्धि जिये ल  
को, विद्या ताहि सुगमि तं, प्राप्ता मिमिवं सुखं ४ य १ प ० तं अर्ह सुखं ॥  
**ॐ तिग्रादवदवीकां सुमा क ॥** • ॥ **विष्णु ग्यत्राय हेल म्ब पत्र सं दव का**  
**य सिद्धि विना यक ४** उम ला ग्य त्रु प स म्य न्न, दहि मे सु ख सं प्र दं ४ ॥ **नमः**  
**श्री महा का ला य कृष्ण वर्यु ज मा त्रु टं**, ब्रह्म सा स न्न त्रु कं, कर्त्तिक पाले च  
ले नाथ मा हां का ले न मा म्य हं ४ ॥ ॐ अदथा महा ता जा लो के पा ले म्ब



हृदिकाद यदि इति विना शोकात् पातं न भवति ॥ उन्नमस्तु कथा  
जानां सर्व इति विना शोकात् पातं न भवति ॥ उन्नमस्तु कथा  
धनं सविधिः ॥ अहमि विद्यः ॥ पूर्णं सच ॥ ० ॥ धनं गुणं पूजा दक्षिण ॥ वि  
सर्जनं यावत् दनं ॥ ० ॥ इह पात्राणां सखा ॥ सविधिः ॥ अहमि वि  
यः पूर्णं याय ॥ आकृष्टाः दिगुवति विद्यः ॥ इह मा न त्रहस्य दनं ॥ स्या  
न किमन्य ॥ गुणं पूजा दक्षिण ॥ ० ॥ धनं पंचाक्षरं ॥ इह मा पंचाक्षरं  
सिद्धिं को जाय ॥ कलसादिष्वकविद्यः ॥ अहिर्वाय ॥ ससय काय ॥ वा



वः॥ • ॥ धनंति॥ वलिकाया॥ धनका॥ • ॥ अषाहमि॥ कनसा ह  
जमं॥ सिद्धम्॥ ज्ञायक॥ ज्ञायका॥ • ॥ कर्मि॥ संजय॥ व॥ च॥ न॥ वि  
चित्तमाका • ॥ संवत् १००० मि॥ रुद्रि॥ अदिः नवमि॥ अनिज्व  
लवाल॥ ध॥ क॥ क॥ साय॥ सिद्धयका॥ • ॥ लिखितं॥ वृ॥ हा॥ ल॥ या॥ व॥ ज्ञा  
चार्य॥ आदव॥ उ॥ सु॥ ग॥ आदव॥ ता॥ क॥ क॥ डों॥ थ॥ डों॥ ग॥ द॥ य॥ का॥ न॥ या॥ ह॥ ल॥ ग॥ तं॥

थसुरुसना नंला एयाना काल॥ का॥ सा॥ पंचमा हा पा॥ पलायमा॥ गु॥ य॥ सा॥ न॥

थसुरु वृ॥ हा॥ या॥ अ॥ न॥ जा॥ क॥ डों॥ गु॥ रा॥ ह॥ या॥ गु॥ ॥ - ॥ ५५



X शत वर्षः

ॐ नमः शिवाय ॥ ० ॥ पुनर्वलि विष्णु नमः ॥ ० ॥ ॥ ज्ञानोः धृपः हास  
जय ॥ ॐ अगति सुख गति गच्छेत्तु हं हं रुठ रुठ स्वाहा ॥ ॥ न गत दक्षिण स्यादि  
जि पुनर्वलि विष्णु नमः ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ० ॥ ॥ ज्ञानोः धृपः हास  
जाः ॐ नमः शिवाय ॥ ० ॥ ॥ ज्ञानोः धृपः हास  
विष्णु नमः ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ० ॥ ॥ ज्ञानोः धृपः हास  
स्वाहा ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ० ॥ ॥ ज्ञानोः धृपः हास  
अगति दौ वक्तुं दक्षिण स्याहा ॥ सर्वमा लपुनर यपस्म दक्षिण स्याहा ॥ ० ॥



पूजा ला स्यात् ॥ उं कृष्णवर्मा हाक्रां वज्राम्बलं कर्त्तुं डिनिः तर्जनी पाण  
धनं वेदाऽर्म्मत्राज नमस्तुते ॥ १ ॥ यतिविषय ॥ उं दक्षिणे सर्वप्रमाणे पणय  
सर्वं त्रयदासं गतिविदा अभिर्थाऽं दं वलिः गुरुं त्वय स्वाहि २ उं आ  
४ हं रुड स्यात् ॥ ० ॥ पन होम कनं पुन पूजा ॥ जाय धूपः आ क पापुष्यं ॥  
समा स्यात् नवाय ॥ उं गति अभि य नमऽस्यात् ॥ उं र स्म कृते स्म गाय स्यात्  
४ ॥ उं गति मुक्ति य स्यात् ॥ उं माता मह कृते य स्यात् ॥ उं सर्वप्रदे न य स्यात्  
४ ॥ उं वं धू व र्जकु ले य स्यात् ॥ उं आ ग द आ य ग र्हा प्रण पिदि गाय स्यात् ॥ उं



ॐ मिदं शुभं चोक्तं हतगयस्याह ॥ ३ ॥ सिंहव्याघ्राहतगयस्याह ॥ ४ ॥ ॐ आत्मापना  
यस्याह ॥ ५ ॥ ॐ आत्रनेदत्तमनिद्रा ॥ ६ ॥ वाहगपुनपि अभवयस्याह ॥ ७ ॥ ॐ आत्रवद  
श्चपुनलाकगतगयस्याह ॥ ८ ॥ ॐ नत्रकं वूः मयवूः पसूजीनिगतगयस्याह ॥ ९ ॥ ॐ दि  
प्यक्रितिकृतिरुमिस्त्रापितगयाधवायस्याह ॥ १० ॥ पिरुवंगमगायकमाह  
व ॥ ११ ॥ मगायगुतूश्चगुलत्रं वन्द्यस्याह ॥ १२ ॥ ॐ आत्मगगाश्चक्षमाहसि  
यनम ॥ १३ ॥ ॥ ~~दुष्टा~~ ~~स्या~~ ~~सुति~~ ॥ १४ ॥ ॐ नीलयांतीर्यकपुनदवास्  
गानत्वाः ॥ १५ ॥ ॐ निरुवकाकात्रः ॥ १६ ॥ ॐ पुनंपुनमास्यहं ॥ १७ ॥ ॥ बलि ॥ १८ ॥ ॐ पुनवय



नी. गत्र कात्र पुत्र तृयना ञ्मयः ऊऊ मान्नस्यः आयुष्कात्रा गध मसि सुय्यादि  
उरुरु ले संप्राप्ति काम नार्थः सर्वपुत्र तृयदा व ञ्म नार्थः ॐ देव तिरुची  
त्रः मत्स्य मांस दक्षिणितः सर्वय कत्र न सदिता यः अगति दा व ञ्म नार्थः ॐ  
आ ४ रु रु ४ स्वाहा ॥ • ॥ धनः साकृन्मयवृजा ॥ साकृज्जंकाः सिद्धः सा  
कृः साकृः स्वानः समयः अत्राः साकृ ॐ ताः मतविय ॥ • ॥ यच्च स्मिवा  
यादि ॥ • ॥ धनः स्वताः सिः नंयुता शः कुगहायक ॥ • ॥ धनः सुवा  
गाधपत्रय ॥ • ॥ धनदिगवतिविय ॥ पत्रि मात्रपूजा याय ॥ • ॥



स्वानकितन्य ॥ उं आ ब्र मं सु सु य र्म नं : द व वि पि र मा न वा य क चि त्स य  
त्रः म या द न न ता यि नः र कि मा या रु ॥ सर्व य उ स उ य ग त्वा र्च वि मु क  
स्यः पि त र सु स्य ना द तः पु त र्यं म हा त्म त उ वाः यि न रि च तः ना ना पु त र जि  
ला द वा ता यः ग या सि त्रि सि मु क यं ति र्थ म न्ना रु न स्ति तं त उ आ दि ग न्ध  
ग दा ध त र्यं पु त न मा मि त् ॥ • ॥ ध न गु रू पू ज्ञा ॥ द डि न्ना ॥ • ॥ आ  
सि य ॥ • ॥ पं चा क स ॥ • ॥ स गं सि रु न्ना ह नि को का य ॥ • ॥  
स म य ज्ञा ॥ • ॥ ध न पू ति च स्य ति ॥ • ॥ जा कि जी न्यः ज ज मा



नयानदिव्य॥ • ॥ पुनरति काय॥ • ॥ दक्षिणदिग्भसः तं द्यः सुसि  
गात्राः वृत्तास्तथा॥ स कृत्वा तं द्यस्तथा॥ • ॥ वृत्तिपुनरति  
विद्यनस्तथा॥ • ॥ वृत्तिधूलिधूल्यतिः तादनतय॥ मा. को. ४॥ १



धनवलि को यनाम संख्या ॥ ० ॥  
मध्य ॥ आया गाम्बलः इममभिरु  
उक्ताय ॥ उगवन्ति ॥ धरापि ध  
संकाय ॥

अनगस ॥ देगि ॥ अगम ॥  
उममनः मलिका न हने मन्त्र ॥  
वेद्य ॥ कावया न ॥ दिगी ॥ वदि ॥  
विज्ञा न ॥ आठ उग्र ॥ नेदि ॥ ० ॥  
तुंथि ॥ पूर्य ॥ वधि ॥ दूगा ॥ स्वर्ग  
सद्व ॥ आठ ॥ पागा ॥ आगलो  
क ॥ मय म ॥ उने मा भूषादि ॥  
दयादि गा ॥ कपा ॥ दयाक्रातः  
दयाद्व ॥ आप ॥ ने ॥ दयाद्व ॥ का  
आ ॥ पथि ॥ चतु स्पर्श ॥ स्त्रय नः ॥  
गम ॥ च न ॥ अचल ॥ जीवा ॥ स्मा ॥ प  
न मा ॥ स्मा ॥ क न ॥ क ॥ को स ॥ दराग नि  
उग्र पा नः ॥ न ॥ स य ल ॥ द ॥ न ॥ उग्र  
षाग गि संसा ॥ पि ॥ वा ॥ न ॥ सु ॥ ॥



पूर्व॥दिगताज्ञ॥

ॐ नमो भगवते ॥ १ ॥  
वदन्ति तं ॥ २ ॥  
हृदयं तं ॥ ३ ॥  
प्रतिदिशं ॥ ४ ॥  
पञ्चसि ॥ ५ ॥  
जामुद्रि ॥ ६ ॥  
वदन्ति ॥ ७ ॥  
यस्य सति ॥ ८ ॥  
कलंकं तेन वा ॥ ९ ॥  
यदा गताज्ञा ॥ १० ॥  
वदन्ति ॥ ११ ॥  
कलंति गताज्ञा ॥ १२ ॥  
पुनरागता ॥ १३ ॥  
आगता न वदन्ति ॥ १४ ॥  
महापद्मना ॥ १५ ॥  
विदन्ति ॥ १६ ॥  
वदन्ति गताज्ञा ॥ १७ ॥  
आदिपद्य ॥ १८ ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

को मा भो ॥ —  
या छु भी ॥ —  
क्षि द दी ॥ —  
वी न्मा ॥ —  
स प्र ष्ठा ॥ —  
क ष्य न ॥ —  
द म नू द षा ॥ —  
ध न र या न क ॥ —  
द व श कि ॥ —  
न ते च भु ॥ —  
की ट र ने द व ॥ —  
अ ह स्म स ऊ उ ॥ —  
वि ऽ अ न न ॥ —  
क ले ऽ नू क ॥ —  
प ष्म न्मा ग ॥ —  
उ म नू द षा ॥ —  
अ ह स्म स ष्म अ म न ॥ —  
अ ग्ना न उ ति ॥ —



दक्षिण॥दिगजो ज॥

वागाहि॥ —  
चलासजकिमी॥ —  
हिकमाहिमी॥ —  
ऐमीददी॥ —  
कपागी॥ —  
काम्पि॥ —  
वशीनी॥ —  
पूजलकाय॥ —  
इलेभु॥ —  
इजालेरेनर॥ —  
ऊननूदी॥ —  
विजयचभु॥ —  
कपालेरेनर॥ —  
नकामलरुग॥ —  
रुमगारु॥ —  
बुठवुठ॥ —  
मीननाथ॥ —  
गकलेसभमन॥ —  
हरसगिगुह॥ —



नेमृष्टः॥॥दिगन्तः॥

येकदा॥ — १  
उमृष्टः॥ —  
दीपदा॥ —  
गंगा॥ —  
धृता॥ —  
दागनिरग॥ —  
तुमृष्टः॥ —  
ॐ नमो॥ —  
न्यायाधि॥ —  
कीनचक्षुः॥ —  
उमृष्टः॥ —  
रघुभिर्गुप्तः॥ —  
गार्गसाधिप॥ —  
पकाठकृत्॥ —  
अनन्ताग॥ —  
उमृष्टः॥ —  
तेजोवन्तः॥ —  
वृष्टः॥ —



ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

[illegible]



वायुय॥ दिगलज॥

वामून्ना॥ — १  
उग्रकिणी॥ —  
क्षोदयी॥ —  
वृक्षो॥ —  
दीपा॥ —  
रघवभागा॥ —  
दृष्टाकलाग॥ —  
धनुधला॥ —  
कालिका॥ —  
कालवधु॥ —  
शिवनरेनय॥ —  
दशिकाठठु॥ —  
वायुधव॥ —  
उद्भवनेवृद्धि॥ —  
वालेठाकिभागा॥ —  
सिद्धिपा॥ —  
योगाधकसिधमन॥ —  
अग्निधनेशुक्ति॥ —



उत्तर॥दिगल्लग॥

माहुं ज्वरी॥ —  
द्यालेजकिन्नि॥ —  
हंदिपिन्नी॥ —  
गिन्निदवी॥ —  
महाधात्मी॥ —  
रुचिगी॥ —  
मासि॥ —  
शुक्ला॥ —  
गल्लस॥ —  
छेष्ठाकर्णरेनेव॥ —  
रुद्रायभी॥ —  
रुद्रव॥ —  
रुद्ररेनेव॥ —  
कोलागिदिद्रु॥ —  
रुद्रगी॥ —  
पुन्नागवृद्र॥ —  
जयदादेनाग॥ —  
गोहिनिपा॥ —  
कर्णवील्लस्रजमन्॥ —  
वद्रुद्र॥ —



ॐ अभन॥ दिग लो॥

महा लो॥ —  
सिंघिनि॥ —  
बोधनी॥ —  
लो॥ —  
सुवगभ॥ —  
दव मा॥ —  
ठकि न॥ —  
०कि न॥ —  
व धु॥ —  
प॥ —  
संज्ञा ल॥ —  
वधि ग॥ —  
वग क॥ —  
ग॥ —  
महा सि॥ —  
कि लो॥ —  
नारु क॥ —  
धु॥

—  
—  
—



यक शोग सया याउ — अदि  
अंश

अन ६ शिगवा अयय १  
अन ६ फयं — अमरक ३  
अन २ कउ अन **४** — अं  
गण — का रुगह ल दका  
कयववा १६ — कासिकवि  
कलिहस्यं कवा दकाकवा दीपस्यं क  
संमाकी — चिकं अमिस्यं न  
माग मास — **तामोः** — वाअः ५१ १  
तुशुशुआकि — रुं १ — आधुय  
हाकउआकि — रुं १ — आधुय  
दंवा — अल — १६  
नाकी — धु — माकी —  
निनि शुग —  
वाग — १ — कंअदमा —  
अल — १ — कंसवागवा —  
अल — १ — सिजवागवा —  
अल — १ — कलसपासिरुवा  
पंदवाउ — अयि —  
समय अमागालं माकी —

अमपंकिआकि — रुं —

५६ः पौ६ः अ६ः १५६ः गुगलादि ६ः  
उमनालापते !



पुजाए कलें॥ मा की - क -  
 कलसि - सगले - कसकंसिद्ध  
 पंचसुतः - कसका - डाडं कामा  
 गलवन - सिद्ध - कसु - कसु  
 गुं - सिद्ध - धुं - धुं - सिद्ध  
 धुं - धुं - गायत - कणात  
 साइर साया - सायि - साय - साय  
 धुं - कसि - साय - वा क - वा  
 वा कसविडा गंजाग या मात - कस -  
 लुपले - डाहपल - दिहि  
 डाहयावड माइतिया सुयवि  
 माइतिया माका - वसु का व क  
 कसयाया माका - डाह - धी २  
 वागवसु - क - ३ -  
 डाड - क - ४ - गा सु कु ५  
 डाह - क - ५ - आह - कु ६  
 डाड - क - ६ - डि का व क ७  
 पंचपना कधुंवा का - माका

गा - पु १ - धागि - पु १



कुसुममो नमः शृंग्या हुं ह्रीं नमः  
स्वामिः ब्रह्मसूक्तोऽसि हि माता  
हुं ह्रीं कादया मन्त्रा गङ्गा लोकपाला म  
हर्षिकादयादि त्रिस्तुतिः कावित्ताः लोक  
पालं मन्त्रं नमाम्यहं ॥ ० ॥  
हुं यन्मन्त्रं कं मन्त्रायितं पहा पद्मा  
यि द्या यत्नं गच्छि मातं क्रीडतृपं  
नीलदंष्ट्रं मन्त्रायितं उच्छि वत्स  
कृतातं कुदं दणकोटं नमाम्यहं  
साधुको हृदि दंष्ट्रं कथ्य वत्स  
गीता हृत्प्रायकं कथाया यवना  
त्रयि शृंग्या त्रुक्ता सुगता सुप्रि  
भृगवै दयादि त्रयि सुहृगत्सुः इ  
कान्यमात्रादयं क्रीडासुप्रि  
कीर्तयन्ति सर्वजगताः विष्णु प  
ञ्चमं कृवं ॥ ० ॥ गङ्गा सु ॥  
मातां क्रीडा मातां शान्ति ॥ ० ॥  
समय क्रीडा मन्त्र ॥ यक्ष मन्त्र  
वाण्यादि ॥ ० ॥ ७२ ॥ ० ॥



[illegible]



पूर्वसमाप्त ॥ २२ ॥

ॐ कलि मयज्जात्रमयहं रुद्र  
स्वाहा ॥ अत्र २१ मन्त्रः ॐ का  
यका ज्ञाजुः यस्तुहोतः अत्र २२  
लासः धनुः कितनथस्तुलः ता  
उंजीजीजी रुद्रस्वाहा ॥ अत्र २३  
ॐ का यका एवस्वा गायत्र  
ज्ञाजुः अत नृत्वास्तगाय ॥ तात्र  
उंघघघाठयः किलयः सवर्तुस्वा  
नामा लयः जृधाल एय नासनी  
प्रधात्रहं का तः उत्रत एदकाया  
गीनी मम । तज्जसिद्धि तयः  
हं रुद्रस्वाहा ॥ शालिकथि पूर  
यतुर्दिगसं गायः गात्रन ॥ २४ ॥  
उं मेदनि मात्रवन्धः हत्रसिद्धि क  
यवं ज्ञा स्त्रहं रुद्रस्वाहा ॥ अत्र २५  
कण्वक विष्णु ॐ का यका धूपथ  
मः ॐ का यका ज्ञाजुः यं कयके  
मात्रनडावसा ॥ २५ ॥



ॐ नमः ॥ यागमम्यत्राय ॥ यागमम्य  
त्रैलनाभीं ॥ यागमागमुदर्शनम् ॥  
महाष्ट्रं महात्मानं ॥ एतद्दीप्तिसिद्ध  
प्रदम् ॥ संसृष्टेयि मूर्त्यधाले ॥ विष्णु  
मूर्त्यमत्रयकं ॥ महावीरमहोन्नतं ॥ य  
कुंजीमन्त्रनायकं ॥ उग्रमूर्त्यं उन्नमनी  
तं ॥ निरुत्तरीगगलं ॥ ज्वलं ॥ उक्ताष्टक  
गतं ॥ वन्द्यं ॥ उन्नतं ॥ उन्नमसध्वजं ॥ या  
गज्वलं ॥ निर्विकारां ॥ निरंका ॥ नमिता  
मयं ॥ नितकृष्णनिगाकालं ॥ अक्षिणी  
यंकत्रानिधि ॥ क्षीनमूर्त्यं ॥ क्षीननि  
धिः ॥ क्षीनं ॥ क्षीनं ॥ गगधः ॥ सुखाह  
स्मृतं ॥ सुस्त्रं ॥ महाकालं ॥ यानकं ॥  
क्ष्णनादिमूर्त्यसर्वं ॥ व्यापकं ॥ यत्रमः  
ज्वलं ॥ सिद्धिपदं ॥ अक्षिपत्रः ॥ यत्रयत्र  
दंतम् ॥ दस्यहं ॥ यदाय ॥ क्षीनं ॥ सुत्रं ॥  
दयादया ॥ दधमद्वज ॥ उग्रपदं ॥ मुक्ति  
दैवः ॥ अष्ट्रं ॥ अष्ट्रमत्राधिप ॥ काता  
मित्रमृदुकां ॥ गङ्गा ॥ कमनि ॥ यंकुलप्रदं ॥  
कात्रि ॥ अष्ट्रं ॥ वरुण ॥ अष्ट्रं ॥ यत्रादिगं  
गधम् ॥ कमलद्वी ॥ एतन्नाथः ॥



हमवन्निष्ठलकनीः सायुत्रिय  
नमस्तुतुः सायुत्रियं प्रायामम  
ॐ॥ ॥ गिनमस्तुग॥ ॥ यात्र  
नकायिभतादिः यिकचाए  
रुहायुनी॥ यमतागपुलादयी  
नमस्तुतागसायत्रि॥ ॥ ये  
पुर्व्यमुकनिगसाः मर्दनिस्र  
कनितुमा॥ जोखार्दकदसि  
नमामिदियगुपिनि॥ ॥  
उं नमस्तुगुहपडाः नमस्तुमायाग  
निये॥ नमस्तुगुनस्त्रियः नमस्तु  
वनसन्निरे॥ सर्वसत्तदिताथय  
यिग्राताहि नमस्तुग॥ ॥  
उं नमस्तुगुआगामत्रोय॥ सर्वला  
वात्मकं नार्थः कोगिनिक्कालना  
यकः कोगाम्यलंजगं नार्थः सर्व  
सत्यसर्वजन्॥ यत्रमायमस्तुस  
त्यमस्तुनगस्तुमस्तुएउसर्वसा  
वजगर्वायगपगस्तु॥ महानाग



ह्रीं काम स्वाहा ॥ ॐ पद्मां काम  
स्वाहा ॥ ॐ विद्यां काम स्वाहा ॥ ॐ  
श्रुतं ताम स्वाहा ॥ ॐ ठ किं ताम स्वा  
हा ॥ ॐ नीलं दक्षं पस्वाहा ॥ ॐ  
महावतां य स्वाहा ॥ ॐ ड कीं व  
काम स्वाहा ॥ ॐ तुम्हा ताम स्वा  
हा ॥ य ऊ पुष्पं पुष्पं क स्वाहा ॥ ॥

**पद्मां काम ताम काम स्वाहा**  
॥ ॐ नीलं वर्धं महावीलं रवर्धं  
पां धर्मं क रुजनीं ॥ सर्व मा तमि  
हं गायः ॥ ॐ च लवीलं नमस्तु  
॥ ॐ पुष्पं ताम नमस्तु ॥ स  
र्वं पुष्पं दायकं ॥ अं वि क ॥ ॐ  
इवर्धं ताम ॥ ताम तलम काम  
ता ॥ ॥ ॐ कृत्तं वर्धं महाया तं  
स कृत्तं मरिषधी ॥ इ धर्मं  
रगं संहर्तुं ॥ क्रोत्वा ज नमा  
म्य हं ॥ १ ॥ महा ह्रीं नमस्तु ॥



ॐ ह्रस्वात्रमिणयस्वाहा॥०॥  
ॐ प्रणिसत्रायस्वाहा॥ ॐ सो ह्रस्व  
प्रमर्द्दभयस्वाहा॥ ॐ महो माय  
त्रियस्वाहा॥ ॐ मना भित्तया  
यस्वाहा॥ ॐ महामात्रनृसा  
त्रयीयस्वाहा॥ ॥ ॐ अहव  
कायस्वाहा॥ ॐ अनेत्रास्माय  
स्वाहा॥ ॥ ॐ एकायस्त्रा  
स्त्रिययस्वाहा॥ ॐ यस्मायप  
तास्त्रिययस्वाहा॥ ॐ यत्रुध  
यनागास्त्रिययस्वाहा॥ ॐ  
क्रोधेतायकास्त्रिययस्वा  
हा॥ ॐ अग्नेतास्त्रिययय  
स्वाहा॥ ॐ अग्नेताकास्त्रिय  
यस्वाहा॥ ॐ वायुययवध  
स्त्रिययस्वाहा॥ ॐ अग्ने  
स्त्रियययस्वाहा॥ ०  
ॐ यन्मीरुकायस्वाहा॥ ॐ ॐ



लूसाधनिः शहवजः नेगान  
 स्माः कोगाम्यतः ॐ डादिज्जु  
 दिगलोकपात्रादिः दशको  
 उः दवददीकायाहनाय  
 कास्मानलावयेय ॥ ० ॥  
 गोप ॥ ॥ स्यलावसुजा  
याद्यादिपूषंन्याम ॥ ० ॥  
स्वानवीय ॥ उंचउमहागोप  
दमयस्याहा ॥ निलवर्ष्यय  
स्याहा ॥ उज्ज्वलायस्याहा ॥ उस्व  
उकृष्णवतायस्याहा ॥ उस्व  
गायत्रायस्याहा ॥ उंयिगाव  
लायस्याहा ॥ उंनकोचलाय  
स्याहा ॥ उंअमाचलायस्या  
हा ॥ उंद्वषवकीयस्याहा ॥ उं  
माहवकीयस्याहा ॥ उंयिग  
गवकीयस्याहा ॥ उंगागवकी  
यस्याहा ॥ उंअवकीयस्या  
हा ॥ उंवर्कयागिनीयस्याहा ॥



ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥  
 उंक् वनि निदिनवा मजानु सर्थ  
 हसि सुखर्कः गगन त्रिगु मूला  
 गङ्गा नीला कि मागं निविदिनघ  
 नसत्रिं चउयग वउयकः स  
 मयउरव रकं विद्वह काय  
 गायं ॥ ॥ ज्ञापयय ॥ निता  
 ज्ञनादि ॥ ॥ स्वलव सुका  
 जाद्यादि पृष्ठं न्याय ॥ स्या नदी  
 यं ॥ ॥ स्मिप्रयाय ॥ ॥  
 धनमवित्र ज्यल स हां माया र  
 गवणिः हवकः नै मात्माः को  
 गा स्वलः ॥ ज्ञा वा ह न्याय ॥ ॥  
 धय ॥ उं र गय न प्रमग शि  
 वित्र ज्यल वउम हा गोषणः  
 स हां माया र गवणिः प्रणि स  
 गाः सा ह प्रमु मर्द्धनीः मा हां मा  
 यूती ॥ ज्ञा गवणिः स हा मन्त्रा न



सिं रे वा वे का वुं मा ॐ वा मला कू ग यां । ह स्वा हा  
सिं ग चा वा का ना उ वे वे वा ॐ महा कू रे यां पत्रिग  
सिं ले महा मा पु का के वा ॐ वा ॐ महा कू यां का क  
सिं ग ले ग वे वा का के वा ॐ वा ॐ महा कू रे यां यपा  
सिं ले ग ले ग वे वा का के वा ॐ वा ॐ महा कू रे यां धतित्र  
सिं ग पु मा का वा को ॐ वा ॐ महा कू वा मा कू ग यां गहं गत्र  
सिं पु मा ले का वा को ॐ वा ॐ महा कू वा मा कू ग यां सिमावहि  
यां थ कू



